This question paper contains 3 printed pages.

B.A./B.Ed. (Pt. - II) **Roll No**

205-I

Hin. Lit. - I

B.A./B.Ed. (Four Year) (Part - II) EXAMINATION - 2026

Paper Code: 205-I

B.A.B.Ed. 05/06/07 (G-B)

हिन्दी साहित्य–I

Paper-I

(रीतिकाल)

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks: 100

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर पुस्तिका नही दी जायेगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर लिखें।

किसी भी एक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर उत्तर–पुस्तिका में अलग अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल करें।

प्रश्नों के उत्तर लिखने के पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखिए।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक सामने अंकित है।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **10×4 = 40**

(क) नील सुखेन हन् उनके नल और सबै कपि–पुंज तिहारे,
आठहु आठ दिशा बलि दै, अपने पद लै पितु जा लगि मारे।।
तोसे सपूतहि जाइकै बालि अपूतन की पदवी पगु धारे,
अंगद संग लै मेरो सबै दल, आजुहि क्यो न हने बपुमारे।।

अथवा

मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोई,
जा तन की झाँई परै–स्यामु हरित दुति होई।।
तजि तीरथ हरि–राधिका तन–दुति करि अनुराग,
जिहिं ब्रज केलि–निकुंज–मग–पग–पग होतु प्रयागु।

ruoldpapers.com

(ख) गंग तरंगिनी बीच बरंगिनी
ठाडी करै जपु रूप उदोती
देव दिवाकर की किरणे
निकसै विकसै मुख पंकज जोती
नीर भरी निचुरै अलके
घुटि के छलकै मनो मांग ते मोती
बिज्जुलि से झलकै लपटे कन
कंचन से अंग उज्जल धोती।

अथवा

ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती है
कन्द मूल भोग करै कन्द मूल भोग करै
तीन बेर खाती ते वै तीन बैर खाती है
भूषण सिथिल अंग भूषण सिथिल अंग
बिजन डुलाती ते वै बिजन डुलाती है
भूषण भवन सिवराज बोर तेरे त्रास
नगन जडाती ते वै नगन जडाती है।।

(ग) जासो प्रीति ताहि निदुराई सो निपट नेह
कैसे करि जिय की जरनि सो जताइये
महा निरदई दई कैसे कै जिवाऊँ जीव
वेदन की बढ़वारि कहा लो दुराइये
दुःख को बखान करिबै को रसना के होति
ऐपे कहूँ वाको मुख देखन न पाइयें
रैनदिन चैन कोनलेस कहूँ पेये भाग
आपने ही ऐसे दोष काहि धौ लगाइये।

अथवा

नीके न्हाइ धोई धूरि पेठो नेक बैठो आनि
घूरि जटि गई धूरिजटी लो भवन में
पैन्हि पैठो अम्बर सु निकस्यो दिगम्बर है
दृग देखो भारू में अचम्भों लाग्यो मन में
जैसो हिमकर धरे औ गरे गरल
भारी धरु डरू वरु छाड्यो एक-खन में
देखे दुति ना परत पाप रेते या परत
सापरे ते सुरसरि सांप रेंगे तन में।।

ruoldpapers.com

(घ) ऐसी न देखी सुनी सजनी घनी
बाढत बात वियोग की बाधा
त्यो पद्माकर मोहन को तब
तै कल है न कहूँ पल आधा
लाल गुलाल घलाघल में दृग
ठोकरे दे गयी रूप अगाधा
कै गयी कै चेटक–सी मन
ले गयी ले गयी गयी राधा।।

अथवा

कालिंदी की धार निरधार है अधर गन
अलि के घरत जा निकाई के न लेस है।
जीते अहिराज, खांडि डारे है सिखंडि, घन
इन्द्रनील कीरति कराई नाहि ए सहै।
एडिन लगत सेना हिय के हरष कर
देखत हरत रतिकन्त के कलेस है।
चीकने सघन अंधियारे ते अधिक कारे
लसत, लछारे, सटकारे तेरे केस है।।

ruoldpapers.com

2. आचार्य केशव की संवाद–योजना की विशेषताओं को व्यक्त कीजिए।

अथवा

मुक्तक काव्य की दृष्टि से बिहारी सतसई अनुपम कृति है इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

3. देव की कविताओं के आधार पर उनके काव्य की विशेषताएँ बताइये।

अथवा

कवि भूषण की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4. "घनानन्द स्वच्छंद धारा के अग्रणी कवि थे" इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

आलम के काव्य सौष्ठव का विवेचन कीजिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :–
(क) रीतिकाल की सामाजिक व राजनैतिक स्थिति का वर्णन
(ख) रीतिबद्ध काव्य धारा की विशेषता व प्रमुख कवि
(ग) पद्माकर के काव्य में श्रृगांर, भक्ति व वीर रस का परिचय
(घ) सेनापति का प्रकृति चित्रण